



# Hindi Urdu for Health

*The Practice of Medicine in Hindi and Urdu*

[repositories.lib.utexas.edu/handle/2152/64261](https://repositories.lib.utexas.edu/handle/2152/64261)

---

Hindi Urdu Flagship | South Asia Institute | Department of Asian Studies | The University of Texas at Austin

---

## Ayurvedic Training and Practice

While Ayurveda is an ancient system of medicine, training for it involves many years of study as well as apprenticeship. The apprenticeship could run in the family, as from father to son, or in a more formal setting, as with an acclaimed teacher. This apprenticeship could go on for decades, or till such time that the teacher felt confident in the abilities of his student. In modern times, universities and colleges in India have instituted formal certificates, diplomas and degrees in this traditional art and science of medicine. These formal degrees can range from one to three years. They may also include curriculum on modern forms of medicine to fill the gaps that traditional medicine may have. Presented here are narratives of how long it takes to become good in Ayurvedic practice.

---

## TRADITIONAL FAMILY HISTORY & TRAINING - PART 3

Video URI: [hdl.handle.net/2152/65622](https://hdl.handle.net/2152/65622)

### Contents:

Hindi Transcription .....	2
Hindi Vocabulary .....	3
Hindi Questions .....	5
Urdu Transcription.....	6
Urdu Vocabulary .....	7
Urdu Question .....	10

## Hindi Transcription

देखो जी मेरा नाम वैद्य मुकेश शर्मा है... हम यहां 1980 से, ये हमारी दुकान है... मेरे पिताजी, पूज्य पिताजी यहां पर प्रैक्टिस करते थे सन् 64 से... सन् 64-65 से यहां से प्रैक्टिस कर रहे हैं और फिर उसके बाद, उनके देहान्त के बाद मैं उनके साथ आ गया था... तो तकरीबन पंद्रह-बीस साल, बीस साल मुझे भी यहां प्रैक्टिस करते हो गये हैं... तो इसकी जो प्रेरणा है... जी... इसके प्रेरणा स्रोत आप अपने पिताजी को मानते हैं या उनके पिताजी, आपके पिताजी के भी जो पूर्वज थे, वो भी क्या इस कार्य में थे? नहीं... हमारे पिताजी के पूर्व पिताजी इस कार्य में नहीं थे... मेरे प्रेरणा स्रोत मेरे पिताजी ही हैं... उनका पूरा नाम, स्वर्गीय वैद्य जनार्दन स्वरूप शर्मा है... वो इस इलाके के सबसे पुराने जाने-माने वैद्य रहे हैं... वो तकरीबन चालीस वच्चों से यहां पर प्रैक्टिस कर रहे थे... अब उनका शरीर पूरा हो गया है... 2000 में उनका शरीर पूरा हो गया है... ये बतायें कि जो आपने इस क्षेत्र में जो आपने सीखा, तो इसकी क्या आपने कोई फार्मल ट्रेनिंग ली, किसी इंस्टीट्यूट से, या पिताजी से ही सीख के कोई इम्तिहान दिये थे... इसके बारे में विस्तृत रूप से हमें बतायें? देखो जी इसके बारे में हमने अपने पिताजी से ही ट्रेनिंग ली, और उन्हीं के नक्शे कदम पर हम जो है ये काम चला रहे हैं... तो कितने वर्ष आपने ट्रेनिंग ली? तकरीबन बीस वर्ष हमने उनके साथ ट्रेनिंग ली... उसकी शुरुआत किस तरह से हुई और क्या-क्या मुश्किलें आईं आपको? कभी आपको लगा कि ये काम तो हमसे नहीं होता... हां जी, शुरु में जब आधुनिक युग नहीं था, तो हम खारी बावली से दवाईयां लेकर आया करते थे और अपने पिताजी के साथ मिलके उनको घोटना-पीसना, इमामदस्ते में कूटना, फिर छानना, इस तरह से कार्य करते थे... लेकिन अब ये आजकल इतना समय का आभाव है कि या .तो आदमी प्रैक्टिस कर सकता है या फिर जो है दवाईयां खुद बना सकता है... अब तो कंपनियों की बनी-बनाई दवाईयां हैं, उन पर विश्वास करके हमें ये कार्य करना पड़ता है... ये बतायें कि आपके पास किस-किस प्रकार के मरीज आते हैं? किस उम्र से किस उम्र के मरीज आते हैं और ज्यादातर इस इलाके में या जहां से भी आपके मरीज आते हैं, कौन-कौन सी बीमारियां बहुत ज्यादा हैं जिनका आप इलाज करते हैं? देखो जी जैसे तो हमारे पास सभी तरह के, सभी उम्र के मरीज आते हैं, पर ज्यादातर जो है यहां पर पेट के रोगी, स्किन प्रॉब्लम के रोगी और बिगड़े हुये बुखार के रोगी, ये ज्यादा आते हैं हमारे पास... तो कोई ऐसा हुआ है कि आपकी जो पद्धति है, जो आप आयुर्वेद के द्वारा अपने मरीजों का जो दुख है, उसका निवारण करते हैं... कोई ऐसा हुआ है कि जिन्होंने पहले कहीं और, ऐलोपैथी या और पद्धति से अपना इलाज कराया हो और आपके पास आये हों और फिर ठीक हुये हों? हां जी ऐसे, अनेक रोगी हैं ऐसे... जिन्होंने पहले ऐलोपैथी डॉक्टरों से इलाज कराया और उन्हें आराम आ जाता है लेकिन वो रोग उनका कटा नहीं... लेकिन फिर उन्होंने आयुर्वेद की शरण ली... चूंकि हमारा यहां पर ये सबसे पुराना वैद्य जी का बनाया हुआ ठीया है, तो वो रोगी यहां पर चले आते हैं और ठीक हो जाते हैं... कहां-कहां से रोगी आते हैं? हमारे पास दूर-दूर से भी रोगी आते हैं, पास-पास से भी रोगी आते हैं और दस-दस, पंद्रह-पंद्रह दिन की दवाई भी बन के जाती है, दूर-दूर के लिये, गुड़गांवा से भी आते हैं, जहांगीरपुरी से भी आते हैं, पास में से भी आते हैं... जिसको जैसा पता लगता है, पानीपत से भी आ जाते हैं... तो जो जहां रहता है, किसी के द्वारा, माध्यम से उसे पता लगता है तो वो फिर दवाई लेने के लिये आ जाते हैं... ये बताईये कि हरेक की ज़िंदगी में, हरेक के कार्यक्षेत्र में कुछ ऐसे अनुभव होते हैं जो उसके मर्म को छू जाते हैं... जी... वो अंदर तक बैठ जाते हैं... जी... जी... और ये यादें तमाम ज़िंदगी चलती रहती हैं... जी... मैं काफी विस्तार में आपसे वो बातें सुनना चाहता हूं कि आपकी जो प्रैक्टिस हुई है, क्या-क्या आपके अनुभव रहे हैं, किस-किस प्रकार से, कोई अनुभव ऐसा हो जो आपको बहुत ज्यादा याद हो... ऐसे तो, जैसे तो बहुत होता है, पर फिर भी जो है, कुछ ऐसा है, बिगड़े हुये बुखार में हमने देखा है कि वो रोगी अंग्रेजी दवाईयों का काफी सेवन करने के बाद एक-एक, डेढ़-डेढ़ महीना करने के बाद उनका 99 और 100 बुखार उतर नहीं पाया... और उन्होंने काफी दवाई कर ली, लेकिन वो, और रिपोर्ट उनकी जो भी उन्होंने चैक कराई, उसमें सब निल आया... लेकिन उनका 99 और 100 बुखार नहीं जा

पाया... तो हमने अपनी वैद्यनाथ की जो विषजोरांतक पुष्पक लोह होती है, इसमें हींग का योग है और एक छोटी पीपल का, चूरण का योग है, ये उसको चलाया हमने और वो मरीज, दूसरे-तीसरे दिन से ही ठीक होना शुरू हो जाता है... कोई और अनुभव... और अनुभव, ऐसे हैं, स्किन के हैं, जैसे चमड़ी के रोग किसी को हो गये और वो ठीक नहीं होते और जो है अंग्रेजी दवाई उन्होंने खाई काफी, फिर भी ठीक नहीं हुये, हमने उनको देसी दवाईयों के द्वारा ठीक किया... और हमें भी उम्मीद थी कि हो जायेगा, लेकिन टाईम लगा उसको... टाईम लगने के बाद फिर हमें ये लगा कि हमारे दवाई में, आयुर्वेद दवाई में कुछ जान है, कुछ ताकत है... हमें भी विश्वास होता चला गया आयुर्वेद दवाईयों पे, के इसी कारण से हमें, मरीज जब ठीक हो जाता है, फिर हमें पूरा विश्वास हो जाता है...

## Hindi Vocabulary

Physician, doctor	वैद्य
Death	देहान्त
Almost, approximately	तकरीबन
Ancestor	पूर्वज
Late	स्वर्गीय
Well known	जाने-माने
Body	शरीर
Passed away	पूरा हो गया
Learned	सीखा
Formal training	फार्मल ट्रेनिंग
Test	इम्तिहान
Widely	विस्तृत रूप से
In the footsteps of	नक्शे कदम पर
Modern era	आधुनिक युग
Medicines, drugs	दवाईयां
To mix and grind	घोटना-पीसना
	इमामदस्ते
Pound	कूटना
Filter, sift	छानना
Lack of time	समय का आभाव
Faith	विश्वास
What kinds of patients	किस-किस प्रकार के मरीज
Age	उम्र

Patient	मरीज
Diseases	बीमारियां
Cure, remedy, treatment	इलाज
Most	ज्यादातर
Upset stomach	पेट के रोगी
Patients with skin problems	स्किन प्रॉब्लम के रोगी
Chronic patient	बिगड़े हुये बुखार के रोगी
Method	पद्धति
Ayurveda	आयुर्वेद
Prevention	निवारण
Allopathy	ऐलोपैथी
Provides relief	आराम आ जाता है
Didn't help disease	रोग उनका कटा नहीं
Took recourse to Ayurveda	आयुर्वेद की शरण ली
Dwelling place	ठीया
Where does the patient come from	कहां-कहां से रोगी आते हैं
The patient comes from far away	दूर-दूर से भी रोगी आते हैं
Through, by means of	माध्यम
Work area	कार्यक्षेत्र
Experience	अनुभव
Touches the roots	मर्म को छू जाते हैं
Settle deep inside	अंदर तक बैठ जाते हैं
Entire life	तमाम ज़िंदगी
Expanse	विस्तार
Listen	सुनना
Remember more	ज्यादा याद हो
Happens a lot	वैसे तो बहुत होता है
In chronic illness	बिगड़े हुये बुखार में
Patient	रोगी
English medications, drugs	अंग्रेजी दवाईयों
Use	सेवन

	विषजोरांतक पुष्पक लोह
Adding asafoetida	हींग का योग
Adding the powder of small ficus religiosa (pipal)	छोटी पीपल का, चूरण का योग है
Skin disease	चमड़ी के रोग
Expectation	उम्मीद
Life	जान
Strength	ताकत

## Hindi Questions

**डॉ शर्मा के मरीज़ ज्यादातर किस तरह के हैं?**

- 1 पेट के रोगी
- 2 स्किन प्रॉब्लम के रोगी
- 3 बिगड़े हुये बुखार के रोगी
- 4 सब के हैं

**शर्मा जी के पास रोगी कहाँ कहाँ से आते हैं?**

- 1 गुड़गाँव से
- 2 जहाँगीरपुरी से
- 3 पास और दूर, सब जगह से
- 4 पानीपत से

## Urdu Transcription

دیکھو جی میرا نام ویدیہ مکیش شرما ہے۔۔۔ ہم یہاں 1980 سے، یہ ہماری دکان ہے۔۔۔ میرے پتا جی، پوجیہ پتا جی یہاں پر پریکٹس کرتے تھے سن 64 سے۔۔۔ سن 64-65 سے یہاں سے پریکٹس کر رہے ہیں اور پھر اس کے بعد، ان کے دہانت کے بعد میں ان کے ساتھ آگیا تھا۔۔۔ تو تقریباً پندرہ بیس سال، بیس سال مجھے بھی یہاں پریکٹس کرتے ہو گئے ہیں۔۔۔

تو اس کی جو پیرنا ہے۔۔۔ جی۔۔۔ اس کے پیرنا رستروت آپ اپنے پتا جی کو مانتے ہیں یا ان کے پتا جی، آپ کے پتا جی کے بھی جو پروج تھے، تو بھی کیا اس کاریہ میں تھے؟

نہیں۔۔۔ ہمارے پتا جی کے پورو پتا جی اس کاریہ میں نہیں تھے۔۔۔ میرے پیرنا رستروت میرے پتا شری ہیں۔۔۔ ان کا پورا نام، سوگیریہ ویدیہ جنارڈن سروپ شرما ہے۔۔۔ وہ اس علاقے کے سب سے پرانے جانے مانے ویدیہ رہے ہیں۔۔۔ وہ تقریباً چالیس برسوں سے یہاں پر پریکٹس کر رہے ہیں۔۔۔ اب ان کا شریر پورا ہو گیا ہے۔۔۔ 2000 میں اس کا شریر پورا ہو گیا ہے۔۔۔

یہ بتائیں کہ جو آپ نے اس چھبتر میں جو آپ نے سیکھا، تو اس کی کیا آپ نے کوئی فارمل ٹریننگ لی، کسی انٹسٹوٹ سے، یا پتا جی سے ہی سیکھ کے کوئی امتحان دیے تھے۔۔۔ اسکے بارے میں وسٹرت روپ سے ہمیں بتائیں؟

دیکھو جی اس کے بارے میں ہم نے اپنے پتا جی سے ہی ٹریننگ لی، اور انہیں کے نقش قدم پہ ہم جو یہ کام چلا رہے ہیں۔۔۔

تو کتنے ورش آپ نے ٹریننگ لی؟

تقریباً بیس ورش ہم نے ان کے ساتھ ٹریننگ لی۔۔۔

اس کی شروعات کس طرح سے ہوئی اور کیا کیا مشکلیں آئیں آپ کو؟ کبھی آپ کو لگا کہ یہ کام تو ہم سے نہیں ہوتا۔۔۔

ہاں جی، شروع میں جب آدھنک یگ نہیں تھا تو ہم کھاری باولی سے دوائیاں لے کر آیا کرتے تھے اور اپنے پتا جی کے ساتھ مل کے ان کو گھوٹنا پیسنا، امامدستے میں کوٹنا، پھر چھاننا، اس طرح سے کاریہ کرتے تھے۔۔۔ لیکن اب یہ آج کل اتنا سمے کا آہاؤ ہے کہ یا تو آدمی پریکٹس کر سکتا ہے یا پھر جو بے دوائیاں خود بنا سکتا ہے۔۔۔ اب تو کمپنیوں کی بنی بنائی دوائیاں ہیں، ان پر وشواس کر کے ہمیں یہ کاریہ کرنا پڑتا ہے۔۔۔

یہ بتائیں کہ آپ کے پاس کس کس پرکار کے مریض آتے ہیں؟ کس عمر سے کس عمر کے مریض آتے ہیں اور زیادہ تر اس علاقے میں یا جہاں سے بھی آپ کے مریض آتے ہیں، کون کون سی بیماریاں بہت زیادہ ہیں جن کا آپ علاج کرتے ہیں؟

دیکھو جی ویسے تو ہمارے پاس سبھی طرح کے، سبھی عمر کے مریض آتے ہیں، پر زیادہ تر جو ہے یہاں پر پیٹ کے روگی، سکن پرابلم کے روگی اور بگڑے ہوئے بخار کے روگی، یہ زیادہ آتے ہیں ہمارے پاس۔۔۔ تو کوئی ایسا ہوا ہے کہ آپ کی جو پدھتی ہے، جو آپ آپروید کے دوارا اپنے مریضوں کا جو دکھ ہے، اس کا

نوارن کرتے ہیں۔۔۔ کوئی ایسا ہوا ہے کہ جنہوں نے پہلے کہیں اور، ایلوپیتھی یا کوئی اور پدھتی سے اپنا علاج کرایا ہو اور آپ کے پاس آئے ہوں اور پھر ٹھیک ہوئے ہوں؟

ہاں جی ایسے، انیک روگی ہیں ایسے۔۔۔ جنہوں نے پہلے ایلوپیتھیک ڈاکٹروں سے علاج کرایا اور انہیں آرام آجاتا ہے لیکن وہ روگ ان کا کٹنا نہیں۔۔۔ لیکن پھر انہوں نے آئیروید کی شرن لی۔۔۔ چونکہ ہمارا یہاں پر یہ سب سے پرانا ویدیہ جی کا بنایا ہوا ٹھیا ہے، تو وہ روگی یہاں پر چلے آتے ہیں اور ٹھیک ہو جاتے ہیں۔۔۔

کہاں کہاں سے روگی آتے ہیں؟

ہمارے پاس دور دور سے بھی روگی آتے ہیں، پاس پاس سے بھی روگی آتے ہیں اور دس دس، پندرہ پندرہ دن کی دوائی بھی بن کے جاتی ہے، دور دور کے لئے، گڑگاؤاں سے بھی آتے ہیں، جہانگیر پوری سے بھی آتے ہیں، پاس میں سے بھی آتے ہیں۔۔۔ جس کو جیسا پتہ لگتا ہے، پانی پت سے بھی آ جاتے ہیں۔۔۔ تو جو جہاں رہتا ہے، کسی کے دوارا، مادھیم سے اسے پتہ لگتا ہے تو وہ پھر دوائی لینے کے لئے آ جاتے ہیں۔۔۔

یہ بتائیے کہ ہر ایک کی زندگی میں، ہر ایک کے کاریچھوتھر میں کچھ ایسے انوبھو ہوتے ہیں جو اس کے مر م کو چھو جاتے ہیں۔۔۔

جی۔۔۔

وہ اندر تک بیٹھ جاتے ہیں۔۔۔ جی۔۔۔ جی۔۔۔ اور یہ یادیں تمام زندگی چلتی رہتی ہیں۔۔۔ جی۔۔۔ میں کافی وستار میں آپ سے وہ باتیں سننا چاہتا ہوں کہ آپ کی جو پریکٹس ہوئی ہے، کیا کیا آپ کے انوبھو رہے ہیں، کس کس پرکار سے، کوئی انوبھو ایسا ہو جو آپ کو بہت زیادہ یاد ہو۔۔۔

ایسے تو، ویسے تو بہت ہوتا ہے، پر پھر بھی جو ہے، کچھ ایسا، بگڑے ہوئے بخار میں ہم نے دیکھا ہے کہ وہ روگی انگریزی دوائیوں کا کافی سیون کرنے کے بعد ایک ایک، ڈیڑھ ڈیڑھ مہینہ کرنے کے بعد ان کا 99 اور 100 بخار اتر نہیں پایا۔۔۔ اور انہوں نے کافی دوائی کر لی، لیکن وہ، اور رپورٹ ان کی جو بھی انہوں نے چیک کرائی، اس میں سب نل آیا۔۔۔ لیکن ان کا 99 اور 100 بخار نہیں جا پایا۔۔۔ تو ہم نے اپنی ویدیہ ناتھ کی جو وشجورانتک پشپک لوہ ہوتی ہے، اس میں بینگ کا یوگ ہے اور ایک چھوٹی پپیل کا، چورن کا یوگ ہے، یہ اس کو چلایا ہم نے اور وہ مریض، دوسرے تیسرے دن سے ہی ٹھیک ہونا شروع دن سے ہی ٹھیک ہونا شروع ہو جاتا ہے۔۔۔ کوئی اور انوبھو۔۔۔ اور انوبھو۔۔۔ اور انوبھو، ایسے ہیں، سکن کے ہیں، جیسے چمڑی کے روگ کسی کو ہو گئے اور وہ ٹھیک نہیں ہوتے اور جو ہے انگریزی دوائی انہوں نے کھائی کافی، پھر بھی ٹھیک نہیں ہوئے، ہم نے ان کو دیسی دوائیوں کے دوارا ٹھیک کیا۔۔۔ اور ہمیں بھی امید تھی کہ ہو جائیگا، لیکن ٹائم لگا اس کو۔۔۔ ٹائم لگنے کے بعد پھر ہمیں یہ لگا کہ ہمارے ہمارے دوائی میں، آئیرویدہ دوائی میں کچھ جان ہے، کچھ طاقت ہے۔۔۔ ہمیں بھی وشواس ہوتا چلا گیا آئیرویدہ دوائیوں پہ، کہ اسی کارن سے ہمیں، مریض جب ٹھیک ہو جاتا ہے، پھر ہمیں پورا وشواس ہو جاتا ہے۔۔۔

## Urdu Vocabulary

Physician, doctor	ویدیه
Death	دہانت
Almost, approximately	تقریباً
Ancestor	پوروج
Late	سوگیریہ
Well known	جانے مانے
Body	شریر
Passed away	پورا ہو گیا
Learned	سیکھا
Formal training	فارمل ٹریننگ
Test	امتحان
Widely	وسترت روپ سے
In the footsteps of	نقش قدم پر
Modern era	آدھونک یگ
Medicines, drugs	دوائیاں
To mix and grind	گھوٹنا پیسنا
	امامدستہ
Pound	کٹنا
Filter, sift	چھاننا
Lack of time	سمے کا آبھاؤ
Faith	وشواس
What kinds of patients	کس کس پرکار کے مریض
Age	عمر
Patient	مریض
Diseases	بیماریاں
Cure, remedy, treatment	علاج
Most	زیادہ تر
Patients with stomach problems	پیٹ کے روگی
Patients with skin problems	سکن پر اہلم کے روگی
Chronic patient	بگڑے ہوئے بخار کے روگی
Method	تیہ پد



Ayurveda	آیورویده
Prevention	نوارن
Allopathy	ایلوپیتھی
Provides relief	آرام آجاتا ہے
Didn't help disease	روگ ان کا کٹنا نہیں
Took recourse to Ayurveda	آیوروید کی شرن لی
Dwelling place	ٹھہیا
Where does the patient come from	کہاں کہاں سے روگی آتے ہیں
The patient comes from far away	دور دور سے بھی روگی آتے ہیں
Through, by means of	مادھیم
Work area	کاریہ چھیترا
Experience	انوبھو
Touches the roots	مرم کو چھو جاتے ہیں
Settle deep inside	اندر تک بیٹھ جاتے ہیں
Entire life	تمام زندگی
Expanse	وستار
Listen	سننا
Remember more	زیادہ یاد ہو
Happens a lot	ویسے تو بہت ہوتا ہے
In chronic illness	بگڑے ہوئے بخار میں
Patient	روگی
English medications, drugs	انگریزی دوائیوں
Use	سیون
	وشجورانت پشپک لوگ
Adding asafoetida	بینگ کا یوگ
Adding the powder of small ficus religiosa (pipal)	چھوٹی پپل کا، چورن کا یوگ ہے
Skin disease	چمڑی پہ روگ
Expectation	امید
Life	جین
Strength	طاقت

## Urdu Question

ڈاکٹر شرما کے مریض زیادہتر کس قسم کے ہیں؟

1 پیٹ کے مریض

2 سکن کے پر اہلم کے مریض

3 بگڑے ہوئے بخار کے مریض

4 دئے ہوئے سب